सम्राट पेंग्विनों की अनोखी बस्ती

नरेंद्र देवांगन

मार्च में अंटार्कटिका; कड़ाके की सर्दी लिए तूफान आने वाला है और हर प्राणी उससे बचने के लिए परंपरा से सुरक्षित स्थानों की ओर भाग रहा है। अब बर्फ के गोले पड़ने लगे हैं। अंटार्कटिका के निवासी एडेलाई पेंग्विन, लियोपार्ड सील और अन्य जीव गरम स्थानों की ओर भाग रहे हैं, जबकि हज़ारों ऐसे भी पेंग्विन हैं जो दक्षिण की ओर उस तरफ बढ़ रहे हैं, जहां से सर्दी-तूफान के भय से आतंकित अन्य जीव भाग रहे हैं। ये पेंग्विन 'एम्परर पेंग्विन' अर्थात 'सम्राट पेंग्विन' हैं।

सैन डिएगो के हब्स सी वर्ल्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट की एन बोल्स का कहना है कि अन्य समुद्री पक्षियों की तुलना में एम्परर पेंग्विन उल्टा ही काम करते हैं। वे सर्दियों में प्रजनन में जुटते हैं। मादाएं नरों के लिए आपस में ज़बरदस्त होड़ करती हैं और बेवफाई में उनका कोई जवाब भी नहीं।

ग्राहम रॉबर्टसन ऑस्ट्रेलिया के अंटार्कटिक विभाग में कार्य करते हैं। वे एक परिस्थिति विज्ञानी हैं और उन्होंने नौ महीने समुद्रतटीय बर्फ पर बिताए हैं - सम्राट पेंग्विन के स्वभाव और प्रजनन रीति का अध्ययन करते हुए। रॉबर्टसन ने बहुत पास से इन विलक्षण प्राणियों का अध्ययन किया है। उनका कहना है कि उस कड़ाके की ठंड में मन में यह विचार आए बिना नहीं रहता कि आखिर इस भयंकर सर्दी में इस बेहूदी जगह में ही वे क्यों प्रजनन में जुटते हैं?

जीव विज्ञानी का कहना है कि इस प्रश्न का उत्तर छिपा है इस विलक्षण पक्षी की दीर्घ विकास यात्रा में। कारण एक नहीं, अनेक हैं, पेचीदगियों से भरे। केवल यही तथ्य कि इस कड़ाके की ठंड में जब अन्य पक्षी जान बचाने के लिए भागते हैं, सम्राट पेंग्विन हज़ारों की तादाद में वहां पहुंचते हैं और सफल भी होते हैं।

कई सप्ताहों तक परस्पर मित्रता करने के बाद नर-मादा एक-दूसरे की आवाज़ से पहचान कायम कर लेते हैं। एक-दूसरे को पहचानने के लिए आवाज़ ही एक मात्र माध्यम है, क्योंकि बिलकुल एक से दिखाई देने वाले नरों के बीच न मादा अपने प्रेमी को पहचान सकती है और न नर अपनी प्रेमिका को। पहचान और प्रगाढता स्थापित होने के बाद प्रत्येक मादा केवल एक अंडा देती है और फिर भोजन एकत्र करने के लिए दो माह की यात्रा पर निकल जाती है। इस बीच घुमड़ते समुद्री तूफान और कड़ाके की ठंड में चौबीसों घंटे अंडे सेने की ज़िम्मेदारी नर को निभानी पड़ती है।

दिलचस्प तथ्य यह है कि सम्राट पेंग्विन के शरीर का तापमान मनुष्यों जैसा ही है। फर्क इतना है कि मनुष्य को उस कड़ाके की ठंड से बचाव के लिए 10 किलो वज़न के वस्त्र पहनने पड़ते हैं, जबकि प्रकृति ने पेंग्विनों के शरीर की रचना इस तरह की है कि ये कड़ाके की ठंड सहज झेल जाते हैं। यदि सब कुछ ठीक रहा तो 90 प्रतिशत अंडों से बच्चे निकल आते हैं। इस बीच मादा भी दो माह की यात्रा पूरी कर लौट आती है। अब वे ही अपने नवजात शिशुओं को पालेंगी। मादा के लौटते ही नर तो जैसे पागल हो जाता है। उसे 65 दिनों तक अपने पैरों के नीचे अंडे सेना पड़ा था। इस बीच उसका वज़न भी घट गया है, लगभग एक तिहाई। अब वह नवजात शिशु की ज़िम्मेदारी मां पर छोड़ने के लिए तैयार है।

दक्षिणी गोलार्द्ध में ग्रीष्म के समय में सम्राट पेंग्विनों का पागलपन देखने लायक होता है। मौसम अच्छा हो जाता है। बर्फ की सतह तड़कना शुरू हो जाती है और समुद्र में भी भोजन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। अतः यह समय होता है नवजात शिशुओं के विकास का। उन्हें अब समुद्र में छलांग लगानी है और अपना भोजन स्वयं ढूंढना है।

इसके साथ ही सम्राट पेंग्विन नए-नए उपनिवेश बसाने के काम में जुटते हैं। आबादी जो बढ़ गई है। अंटार्कटिका की समुद्री बर्फ कम होनी शुरू हो जाती है और उसके तट पर नई बस्तियां बसनी शुरू हो जाती हैं। एक उपनिवेश में कम से कम 60 हज़ार सम्राट पेंग्विन वास करते हैं।

बर्फ में पड़ गए सुराखों में से होकर ये रॉकेट की गति

से 1750 फुट की गहराई तक मछलियों की तलाश में जाते हैं। समुद्री सील से बचने के लिए वे ऊपर आते वक्त अपनी गति बढ़ा देते हैं। फलतः जब वे सात फुट उछलकर बाहर आते हैं तो अपने पीछे हवा के बुलबुलों की एक धारा-सी बना देते हैं।

पिछले सौ वर्षों से जीव विज्ञानी इन समुद्री सम्राटों का अध्ययन कर रहे हैं, पर उनके बारे में अभी भी बहुत कुछ जानना बाकी है। अंटार्कटिका में अभी भी सम्राटों की नई-नई बस्तियों का पता लग रहा है। सम्राट पेंग्विनों की जीवन शैली उनकी आदतों का अध्ययन एक दुष्कर कार्य है। फिर भी जीव विज्ञानी उसमें लगे हुए हैं। ग्राहम रॉबर्टसन कहते हैं कि इन सम्राटों के बारे में आप जितनी अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं, उनके प्रति सम्मान की भावना उतनी ही बढ़ती जाती है। ***(स्रोत फीचर्स)***